हरियाणा का चुनावी इतिहास

चर्चा में क्यों?

हरियाणा एक छोटा किन्तु राजनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण राज्य है, जहाँ लगातार **राजनीतिक दलबदल** का इतिहास रहा है, तथा इसका चुनावी परिदृश्य प्रमुख परिवारों और जातिगत गतिशीलता से प्रभावित होता है।

मुख्य बिंदु

- **हरियाणा का गठन (वर्ष 1966):**
  - हरियाणा का गठन **1 नवंबर 1966** को अविभाजित पंजाब से अलग करके किया गया था।
  - पंजाब के पूर्व श्रम मंत्री **भगवत दयाल शर्मा** को **पहला मुख्यमंत्री** नियुक्त किया गया।
  - प्रारंभ में हरियाणा में 54 सीटें थीं, जो **वर्ष 1967 में** बढ़कर **81** हो गईं तथा **वर्ष 1977 तक 90** हो गईं।
- **आया राम, गया राम घटना (वर्ष 1967):**
  - **अभिव्यक्ति की उत्पत्ति:** एक निर्दलीय विधायक गया लाल ने एक ही दिन में कई बार दल बदला।
  - **प्रभाव: "आया राम, गया राम"** शब्द भारत में राजनीतिक दलबदलुओं के लिये एक लोकप्रिय शब्द बन गया।
- **प्रमुख नेताओं का राजनीतिक प्रभुत्व:**
  - **बंसी लाल (वर्ष 1968-1975):** भिवानी के एक जाट नेता, बंसी लाल ने आपातकाल **तक** सत्ता संभाली।
  - **देवी लाल (वर्ष 1977):** आपातकाल के बाद जनता पार्टी को विजय दिलाई; वर्ष 1979 में भजन लाल ने उन्हें सत्ता से बाहर कर दिया।
  - **भजन लाल का प्रभाव (वर्ष 1980-1982):** इंदिरा गांधी की कॉन्ग्रेस के साथ गठबंधन किया, बार-बार पार्टी बदलने के बावजूद सत्ता में बने रहे।
  - **लोकदल का प्रभुत्व:** देवीलाल की लोकदल ने भाजपा के साथ गठबंधन करके वर्ष 1987 में बहुमत प्राप्त किया।
  - **वी.पी. सिंह का काल:** देवी लाल ने वी.पी. सिंह के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान का समर्थन किया, उप प्रधानमंत्री बने तथा उनके बेटे ओम प्रकाश चौटाला ने हरियाणा की सत्ता संभाली।
  - **चौटाला के कार्यकाल:** ओम प्रकाश चौटाला वर्ष 1989 से वर्ष 1991 के बीच अनेक बार मुख्यमंत्री रहे।
  - **हुड्डा काल (वर्ष 2005-2014):** कॉन्ग्रेस के भूपेंद्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व में सरकार बनी, जिसका ध्यान रोहतक क्षेत्र पर केंद्रित था।
  - **भाजपा का उदय (वर्ष 2014):** भाजपा ने 47 सीटें जीतीं, जिससे मनोहर लाल खट्टर हरियाणा के पहले गैर-जाट मुख्यमंत्री बने।
- **वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य (वर्ष 2024):**
  - **ग्रामीण-शहरी विभाजन:**
    - **शहरी क्षेत्र:** गुरुग्राम, फरीदाबाद, पानीपत में उद्योग और गैर-कृषि क्षेत्र अधिक हैं।
    - **ग्रामीण क्षेत्र:** रेवाड़ी, जींद, भिवानी जैसे मध्य और दक्षिणी क्षेत्र कृषिप्रधान हैं, तथा यहाँ जाट आबादी अधिक है।
- **जाट बाहुल्य क्षेत्र की चिंताएँ:**
  - **किसानों का विरोध प्रदर्शन:** कृषि कानूनों के खिलाफ आक्रोश, जिन्हें बाद में निरस्त कर दिया गया।
  - **अग्निवीर योजना:** सैनिकों की रोज़गार की सुरक्षा को लेकर चिंताएँ।
  - **पहलवानों का विरोध प्रदर्शन:** भाजपा नेता पर यौन उत्पीड़न के आरोपों से नाराजगी।
  - **बेरोज़गारी:** युवा रोज़गार के अवसरों से असंतुष्ट हैं।
- **शहरी क्षेत्र:** बुनियादी ढाँचे, रोज़गार और शासन पर ध्यान केंद्रित करना।
- **जातिगत गतिशीलता:**
- **OBC प्रभाव:** भाजपा और कॉन्ग्रेस दोनों OBC मतदाताओं को लुभाने की कोशिश कर रही हैं; कॉन्ग्रेस जाति जनगणना और आरक्षण सीमा बढ़ाने का प्रस्ताव कर रही है।
- **जाट-दलित गठबंधन:** कॉन्ग्रेस चुनावी लाभ के लिये जाटों और दलितों के बीच ऐतिहासिक विभाजन को पाटने का प्रयास कर रही है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/haryana-s-electoral-history